ISSN-2582-6530

अंक: 3-4, जनवरी- दिसंबर 2021 (संयुक्त अंक)

विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका

कंचनजंघा

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का साझा उपक्रम

संपादक : प्रदीप त्रिपाठी

ISSN: 2582-6530

कंचनजंघा : विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका

कंचनजंघा

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का साझा उपक्रम

वर्ष: 02, अंक: 03-04, जनवरी- दिसंबर, 2021 (संयुक्त अंक)

संपादक

प्रदीप त्रिपाठी

पत्राचार का पता

डॉ. प्रदीप त्रिपाठी (संपादक)
ओम साईं कुंज, मंदिर रोड
नीयर रंगीत गर्ल्स हॉस्टल, 06 माइल, गंगटोक
सिक्किम, पिन कोड : 737102

संपर्क : +91 - 6294913900 ईमेल : kanchanjanghapatrika@gmail.com

आवरण और संयोजन : कुमार गौरव एवं कुँवर रवींद्र

वेबसाइट : www.kanchanjangha.in

ISSN: 2582-6530

परामर्श मंडल

रमन शांडिल्य ramanshandilya1943@gmail.com	**राजेश जोशी** rajesh.isliye@gmail.com
देवराज dr4devraj@gmail.com	**शिवमूर्ति** shivmurti.shabad@gmail.com
श्रीप्रकाश मिश्र spm1950@rediffmail.com	**अनामिका** poetryanamika@gmail.com
तेजेन्द्र शर्मा tejinders@live.com	**किरन हजारिका** hazarikakiran68@gmail.com
ओम जी उपाध्याय omjee25@gmail.com	**निर्मला पुतुल** bajateshabd@gmail.com
हरिश्चंद्र मिश्र profharishchandramishra@gmail.com	**वीरेन्द्र परमार** bkscgwb@gmail.com
ए. एस. चंदेल nehushgmzu07@gmail.com	**अनिल राय** anilraigkpu@gmail.com

संपादक मंडल/ समीक्षा समिति

प्रो. भरत प्रसाद
पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग
deshdhar@gmail.com

प्रो. संजय कुमार
मिजोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल, मिजोरम
sanjaykumarmzu@gmail.com

प्रो. जय कौशल
असम विश्वविद्यालय (दीफू परिसर) असम
jaikaushalaudc@gmail.com

प्रो. ब्रज रतन जोशी
लेखक, संपा. (मधुमती), अनुवादक एवं जल-अध्येता
drjoshibr@gmail.com

डॉ. अखिलेश शंखधर
मणिपुर विश्वविद्यालय, मणिपुर
shankhdharak@gmail.com

डॉ. मिलनरानी जमातिया
त्रिपुरा विश्वविद्यालय, त्रिपुरा
milanrani08@gmail.com

डॉ. दीपक पांडेय
सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली
dkp410@gmail.com

डॉ. आशीष कंधवे
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, विदेश मंत्रालय, भा. स.
vhspindia@gmail.com

डॉ. रूपेश कुमार सिंह
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
dr.roopeshsingh@gmail.com

डॉ. चुकी भूटिया
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक, सिक्किम
cbhutia01@cus.ac.in

डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार
govindvillage@gmail.com

डॉ. अनुज कुमार
नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा, नागालैंड
anujkumarg@gmail.com

डॉ. जमुना बीनी तादर
राजीव गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, ईटानगर, (अ. प्र)
jamunabini@gmail.com

कुँवर रवींद्र
कवि एवं कला संपादक
kunwar.ravindra@gmail.com

डॉ. पंकज कुमार सिंह
अध्येता- गांधी चिंतन एवं तकनीकी विशेषज्ञ
gandhikhadi@gmail.com

डॉ. राहुल
अध्येता- जेंडर स्टडीज़ एवं मीडिया
rahul.or.nishant@gmail.com

डॉ. कुमार गौरव
झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, झारखंड
kumar.mishra00@gmail.com

कुमार मंगलम
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
mangalam1509@gmail.com

आशीष कुमार
संपादक, सृजन समय, वर्धा
baajve@gmail.com

डॉ. अखिल मिश्र
DDU, गोरखपुर
ईमेल – akhilmishra777@gmail.com

डॉ. दीपक कुमार
गोरूबथान गवर्नमेंट कॉलेज, कालिमपोंग, पश्चिम बंगाल
deep.presi@gmail.com

डॉ. अनुशब्द
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम
anushabda@gmail.com

 ISSN: 2582-6530

कंचनजंघा

वर्ष: 02, अंक: 03-04, जनवरी- दिसंबर, 2021 (संयुक्त अंक)

इस अंक में...

संपादकीय

बाकी सब इत्यादि थे...

लोक कथाएँ

अरुणाचल प्रदेश की गालो लोककथा: आबो तानी और मोपिन तुम्बम रीबा 'लिली'

मिजो लोककथा: माऊरुआङी डॉ. कैथी रौह्लूंपुई (अनुवादक)

लेख

घातक इच्छा की अवधारणा: मिज़ो और अंग्रेजी की साहित्यिक कृतियों का तुलनात्मक विश्लेषण अजेय झा

नेपाली साहित्य में आयामिक आंदोलन बिर्ख खडका डुवर्सेली

हिंदी के अनुष्ठान में अर्घ्य बनी एक पत्रिका : अरुण नागरी देवराज

मणिपुरी लोकगीत : परंपरा एवं प्रयोग डॉ. एस. लनचेनबा मीतै

बांग्ला का बाउल और भाटियाली लोक संगीत जमुना देबनाथ

त्रिपुरा की लोक संस्कृति : चरक पूजा और गाजन नृत्य शुभ्रांशु दाम

लोक-साहित्य के बरास्ते अरुणाचल प्रदेश की अकथ कहानी डॉ. राजीव रंजन प्रसाद

पूर्वोत्तर भारत का हिंदी सिनेमा अतुल वैभव

कविताएं

रवि रोदन की दो कविताएं

कविता कर्मकार की तीन कविताएं

भीम ठटाल की तीन कविताएं

मनीषा झा की चार कविताएं

आईनाम इरिंग की चार कविताएं

धनंजय मल्लिक की तीन कविताएं

अनूदित रचनाएँ

सुधा एम. राई की चार कविताएँ (नेपाली से हिंदी) अनुवादक: सुवास दीपक
ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्मा की तीन कविताएं (बोड़ो से हिंदी) अनुवादक: सूर्जलेखा ब्रह्मा
हरेकृष्ण डेका की तीन कविताएं (असमिया से हिंदी) अनुवादक: विनोद रिंगानिया

पूर्वोत्तर भारत का पौराणिक क्षितिज

भारत-नेपाल की सांस्कृतिक निधि है 'रामकथा' (नेपाली से हिंदी) मूल : डॉ. गोकुल सिन्हा
अनुवाद: डॉ. नम्रता चतुर्वेदी

कहानियाँ

अज्ञात यात्रा उषा शर्मा
सुलह रीता सिंह

पुस्तक समीक्षा

अदहन में उबलती स्त्री का सच है 'मिनाम' डॉ. महेश सिंह

संपादकीय

बाकी सब इत्यादि थे...[1]

आजादी के पचहत्तर वर्ष पूरे होने पर हम इसे अमृत महोत्सव के रूप में स्मरण कर रहे हैं। स्वाधीनता संग्राम की अहमियत को समझने के क्रम में बीते पचहत्तर वर्षों में हमने प्रत्येक क्षेत्रों में गुणात्मक स्तर पर क्या प्रगति की है, इसका आत्मालोचन करना कहीं न कहीं इस महोत्सव का ध्येय है। सही मायने देखा जाय तो इस महोत्सव की सार्थकता भी इसी बात में निहित है। हम जानते हैं कि भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक समृद्धि के कारण पूर्वोत्तर भारत अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यह विसंगति ही है कि साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्तर पर इतनी समृद्ध विरासत होने के बावजूद भारत का यह अभिन्न हिस्सा लिखित तौर पर इतिहास में उस रूप में दर्ज नहीं हो पाया, जितना होना चाहिए था।

स्वाधीनता आंदोलन में पूर्वोत्तर भारत की भूमिका बहुत ही अहम रही है। ध्यान देने योग्य है, स्वाधीनता संग्राम की महागाथाओं के जयघोष का आर्तनाद आज भी महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु, भगत सिंह एवं सुखदेव इत्यादि तक आते-आते समाप्त हो जाता है। क्या कभी आपने इन जयघोषों में पूर्वोत्तर भारत के किसी सेनानी का नाम सुना है? शायद नहीं। पूर्वोत्तर भारत के सभी राज्य आजादी के संग्राम में समान रूप से सहभागी रहे हैं और इसका एक समृद्ध इतिहास रहा है। यह नाम इतिहासकारों की नजरों से कैसे वंचित रह गए, यह हमारे लिए चिंता और चिंतन का विषय है। इन महत्त्वपूर्ण नामों को 'इत्यादि' शब्द के भीतर समेट देना, कहीं न कहीं इतिहास को प्रश्नांकित करता है। यहाँ राजेश जोशी की कविता 'इत्यादि' सायास स्मरण हो आती है, वे लिखते हैं- "इत्यादि हर जगह शामिल थे पर उनके नाम कहीं भी/ शामिल नहीं हो पाते थे।" निश्चित रूप से इसके पीछे के कारकों का अन्वेषण करना, अनुसंधान के लिए एक महत्त्वपूर्ण विषय-क्षेत्र है।

वर्ष 2020 में प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से प्रकाशित स्वर्ण अनिल की पुस्तक 'पूर्वोत्तर भारत के स्वातंत्र्य वीर' उत्तर पूर्व के सेनानियों को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। इस पुस्तक में डॉ. स्वर्ण अनिल ने पूर्वोत्तर भारत के 22 स्वतंत्रता सेनानियों की चर्चा की है। इस बीच पूर्वोत्तर भारत के सेनानियों को लेकर कुछ और भी महत्त्वपूर्ण अनुसंधान सामने आए हैं। हाल ही में सिक्किम में अध्यापन कार्य से संबद्ध डॉ. बिनोद भट्टराई और राजेन उपाध्याय ने

[1] संपादकीय का शीर्षक वरिष्ठ कवि राजेश जोशी की कविता 'इत्यादि' से उद्धृत है।

अपने अद्यतन अनुसंधान के जरिये सिक्किम के महत्त्वपूर्ण स्वतंत्रता सेनानी त्रिलोचन पोखरेल की विस्तृत चर्चा की है। यद्यपि छिटफुट तौर पर तो पूर्वोत्तर भारत के सेनानियों पर तो कई लेख उपलब्ध हैं, लेकिन स्वतंत्र रूप से मौलिक और प्रामाणिक कार्यों का आज भी अभाव है।

स्वर्ण अनिल के हवाले से कहें तो "भारत छोड़ो आंदोलन में पूर्वोत्तर के स्वतंत्रता सेनानियों की एक लंबी सूची है, जिसमें एक ओर 17 वर्षीय कनक लता बरुआ हैं तो दूसरी ओर 60 वर्षीय भोगेश्वरी फुकनानी और दोनों ने राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए अपना बलिदान दे दिया। पुत्र मोह और अपने प्राणों का मोह छोड़कर मातृभूमि का चयन करने वाली मिजो रानी रौपुइलीयानी ब्रिटिश अफसरों की बर्बरता को अपने बेटे के साथ सहते हुए शहीद हुई, पर परतंत्रता नहीं स्वीकारी।" इसी क्रम में पूर्वोत्तर भारत के अलग-अलग क्षेत्रों से कुछ और भी नाम मसलन रजनी देवी, छमू देवी, ओंगबी, हेलेन लेप्चा एवं मोजे रीबा आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

गौरतलब है, आजादी की लड़ाई में महिलाओं की भूमिका बहुत ही अहम रही है, लेकिन इतिहास के पन्नों से उनके नाम गायब हैं। स्वाधीनता आंदोलन के ऐतिहासिक अध्ययन के क्रम में यदि हम पूर्वोत्तर भारत के इतिहास को देखें तो इसमें पुरुषों और महिलाओं की समान भागीदारी रही है। एक प्रकार से देखें तो पूर्वोत्तर भारत का इतिहास स्वाधीनता आंदोलन में महिलाओं के हस्तक्षेप और समर्पण का मुकम्मल गवाह है।

इस आंदोलन में पूर्वोत्तर भारत के त्रिपुरा से जितेन पाल, शचिंद्र पाल सिंह, वीरेंद्र दत्त, वंशी ठाकुर, प्रभात राय, देव प्रसाद, सेनगुप्त, अब्दुल गफूर, यतींद्रनाथ आदि का नाम उल्लेखनीय है। 1930 के भारत छोड़ो आंदोलन में असम राज्य की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता। इनमें हेमराज बारदलै, कलाई कोछ, हेमराज बरा, तिलक डेका, लक्ष्मी हाजरिका, बलोसूथ, राउतराम कछारी, मदन बर्मन, गुणाभि पाटर, मुकुंद काकति तथा तिलेश्वरी बरुआ आदि प्रमुख रूप से शामिल थे। अरुणाचल प्रदेश में मिसमी संगठन का नेतृत्व कर रहे ताजी मिदेरिन ने इस संग्राम को गति दी। इसी प्रदेश में बापू नाम से ख़्यातिलब्ध मीजेरीबा संत की भूमिका अत्यंत उल्लेखनीय है। मणिपुर से टिकेन्द्रजीत वीर सिंह, पाओना ब्रजवासी, वीर बालक चिंलेनसना एवं रानी मां गाइदिन्ल्यू के समर्पण को आज भी लोग कृतज्ञता के साथ स्मरण करते हैं। प्रत्येक वर्ष 23 अप्रैल को खोंगजोम दिवस के रूप में यहाँ के लोग इन शूरवीरों को अत्यंत श्रद्धा के साथ याद करते हैं। इस आंदोलन में नागा जनजाति समूहों का योगदान स्मरणीय है। अपने त्याग और बलिदान के लिए याद किए जाने वालों में वीरों में जादोनांग की अहमियत को पूर्वोत्तर भारत का समाज आज भी आदर के साथ रेखांकित करता है। निश्चित रूप से इतिहास के पृष्ठों पर आज इन सेनानियों की उपस्थिति एवं महत्त्व को विस्तृत रूप में दर्ज करने की आवश्यकता है।